दिनांक 7/4/2020

कक्षा - 10वीं
विषय - हिंदी

अध्याय

13

मानवीय करुणा की दिव्य चमक (सर्वेश्वर दयाल सक्सेना)

पाठ की रूपरेखा

पाठ में स्वयं को भारतीय कहने वाले फ़ादर कामिल बुल्के के जीवन की उन विशेषताओं का वर्णन किया गया है, जो स्पष्ट करता है कि संन्यासी होते हुए भी वे पारंपरिक अर्थों में संन्यासी नहीं थे। वे जिससे एक बार रिश्ता बना लेते थे, उसे ज़िंदगी भर तोड़ते नहीं थे। जब तक भारत में रामकथा रहेगी, तब तक फ़ादर कामिल बुल्के को एक सच्चे भारतीय साधु की तरह याद किया जाता रहेगा, क्योंकि उन्होंने हिंदी में अपना उल्लेखनीय शोध प्रबंध 'रामकथा : उत्पत्ति और विकास' पूरा किया था। फ़ादर कामिल बुल्के ऐसे व्यक्ति थे, जिन्होंने जन्म तो लिया बेल्जियम (यूरोप) में, किंतु अपनी कर्मभूमि बनाया भारत को। उन्हें हमेशा भारतीय संस्कृति एवं हिंदी भाषा से अगाध प्रेम करने वाले साधु व्यक्ति यानी मानवीयता से परिपूर्ण व्यक्ति का उत्कृष्ट उदाहरण माना जाएगा।

लेखक–परिचय

हिंदी की नई कविता के प्रसिद्ध साहित्यकार सर्वेश्वर दयाल सक्सेना का जन्म वर्ष 1927 में उत्तर प्रदेश के बस्ती ज़िले में हुआ। इलाहाबाद विश्वविद्यालय से इन्होंने उच्च शिक्षा प्राप्त की, उसके पश्चात् कुछ समय इन्होंने अध्यापन कार्य किया, फिर वह आकाशवाणी में सहायक प्रोड्यूसर के रूप में कार्यरत् रहे। इन्होंने 'दिनमान' में उपसंपादक व 'पराग' में संपादक के रूप में कार्य किया।

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना कवि, कहानीकार, उपन्यासकार, निबंधकार व नाटककार के रूप में विख्यात हैं। इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं–पागल कुत्तों का मसीहा, सोया हुआ जल (उपन्यास); काठ की घंटियाँ, खूँटियों पर टँगे लोग, जंगल का दर्द, कुआनो नदी (कविता-संग्रह); बकरी (नाटक); लाख की नाक, भौं-भौं-खौं-खौं (बाल साहित्य); लड़ाई (कहानी संग्रह)। सर्वेश्वर दयाल सक्सेना ने अपनी रचनाओं में सरल, सहज व प्रवाहमयी भाषा का प्रयोग किया है। तत्सम शब्दों के साथ-साथ उन्होंने विदेशी और देशज शब्दों का भी प्रयोग किया है। उनकी रचनाओं में मध्यवर्गीय जीवन के संघर्ष, कुंठा, महत्त्वाकांक्षाओं का चित्रण मिलता है।

पाठ का सार

लेखक की शिकायत

लेखक को ईश्वर से शिकायत है कि जिस फ़ादर की रगों में सभी ... लिए मिठास भरे अमृत के अतिरिक्त और कुछ नहीं था, उसके लिए ... ज़हरबाद (एक तरह का ज़हरीला फोड़ा) का विधान क्यों किया? ... अपना जीवन प्रभु की आस्था और उपासना में बिताया, लेकिन ... उन्हें अत्यधिक शारीरिक यातना सहनी पड़ी। लेखक को पादरी के ... से ढकी आकृति, गोरा रंग, सफ़ेद झाँई मारती भूरी दाढ़ी, नीली ... गले लगाने को आतुर फ़ादर बहुत याद आते हैं।

फ़ादर कामिल बुल्के और 'परिमल' के दिन

लेखक को 'परिमल' के वे दिन याद आते हैं जब वे सभी एक ... रिश्ते में बँधे हुए थे, जिसके सबसे बड़े सदस्य फ़ादर थे। जब सभी हँसी-मज़ाक करते, तो फ़ादर उसमें निर्लिप्त शामिल रहते। गोष्ठियों ... गंभीर बहस करते और उनकी रचनाओं पर बेबाक राय देते। लेखक ... उसके मित्रों के घरों में किसी भी उत्सव अथवा संस्कार में वह बड़े ... पुरोहित की तरह खड़े होकर उन्हें आशीषों से भर देते थे। लेखक ... बच्चे का वह संस्कार याद आता है, जब फ़ादर ने उसके मुख में ... अन्न डाला था। लेखक को उस समय उनकी नीली आँखों में तैरती ... वात्सल्य की भावना ऐसी लगती है, जैसे वह किसी ऊँचाई पर ... छाया में खड़ा हो।

[illegible] एवं उनका परिवार

[illegible] के इंजीनियरिंग के अंतिम वर्ष में थे, तब उनके [illegible] की इच्छा जागी, जबकि उस समय उनके [illegible] एक बहन, माँ और पिता सभी थे। उनकी [illegible] था। उन्हें अपनी माँ की बहुत याद आती [illegible] मित्र डॉ. रघुवंश को अपनी माँ की चिट्ठियाँ [illegible] एक भाई वहीं पादरी हो गया था और एक [illegible] उनके पिता व्यवसायी थे और बहन ज़िद्दी थी, [illegible] चिंतित रहते थे। भारत में बस जाने के [illegible] वह अपने परिवार से मिलने बेल्जियम भी गए [illegible]

[illegible] में शिक्षा, रोज़गार और [illegible]

[illegible] के अंतिम वर्ष में थे, तो वह धर्म गुरु के पास [illegible] संन्यास लेना चाहता हूँ। संन्यास लेने से पहले [illegible] कि वह भारत जाएँगे। उनकी यह शर्त मान ली [illegible] गए। पहले 'जिसेट संघ' में दो साल तक [illegible] धर्माचार का अध्ययन किया और इसके बाद [illegible] में पढ़ाई की। कोलकाता से बी. ए. करने के [illegible] से एम. ए. किया। उन दिनों डॉ. धीरेंद्र वर्मा [illegible] थे। फ़ादर ने वर्ष 1950 में प्रयाग [illegible] के हिंदी विभाग में रहकर 'रामकथा : उत्पत्ति और [illegible] विकास' पर शोध पूरा किया। 'परिमल' में उनके अध्याय [illegible] के प्रसिद्ध नाटक 'ब्लू बर्ड' का 'नीलपंछी' [illegible] भी किया। बाद में वह सेंट जेवियर्स कॉलेज, राँची [illegible] विभाग के विभागाध्यक्ष हो गए। इसके बाद वह [illegible] और 47 वर्ष देश में रहकर 73 वर्ष का जीवन जीने के [illegible] में विलीन हो गए।

[illegible] अंग्रेज़ी-हिंदी शब्दकोश

[illegible] अंग्रेज़ी-हिंदी शब्दकोश' तैयार किया और बाइबिल का [illegible] किया। फ़ादर को हिंदी के विकास और उसे राष्ट्रभाषा के [illegible] की बहुत चिंता थी। वह अपनी इस चिंता को हर मंच पर [illegible] करते थे। शायद हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में प्रचारित [illegible] एक ऐसा प्रश्न था, जिस पर वह कभी-कभी झुँझला [illegible] इस बात पर बहुत दुःख होता था कि हिंदी वाले ही [illegible] की उपेक्षा करते हैं।

फ़ादर की मृत्यु

18 अगस्त, 1982 की सुबह दस बजे का समय था, जब दिल्ली में कश्मीरी गेट के निकलसन कब्रगाह में उनका ताबूत एक छोटी-सी नीली गाड़ी में से उतारकर एक लंबी सँकरी, उदास पेड़ों की घनी छाँह वाली सड़क से कब्रगाह के आखिरी छोर तक ले जाया गया, जहाँ धरती की गोद में सुलाने के लिए कब्र खुदी हुई थी। फ़ादर की देह को कब्र के ऊपर लिटाकर मसीही विधि से अंतिम संस्कार शुरू हुआ। वहाँ पर उपस्थित कई लोगों ने उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की, जिसमें सेंट जेवियर्स के रेक्टर फ़ादर पास्कल ने उनके जीवन और कर्म पर श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा—"फ़ादर बुल्के धरती में जा रहे हैं। इस धरती से ऐसे रत्न और पैदा हों।" इसके बाद उनकी देह को कब्र में उतार दिया गया। फ़ादर को यह पता नहीं था कि उनकी मृत्यु पर कोई रोएगा, किंतु उस क्षण उनके लिए रोने वालों की कमी नहीं थी। लेखक ने फ़ादर बुल्के को 'मानवीय करुणा की दिव्य चमक' कहकर पुकारा है।

» शब्दार्थ

पृष्ठ संख्या NCERT पाठ्यपुस्तक (क्षितिज भाग-2) के अनुसार हैं।

पृष्ठ संख्या 85 ज़हरबाद–गैंग्रीन नामक भयंकर बीमारी/एक तरह का ज़हरीला फोड़ा; विधान–नियम; आस्था–विश्वास; यातना–पीड़ा; देहरी–दहलीज़; पादरी–ईसाई धर्म का पुजारी; आतुर–बेचैन अपनत्व–अपनापन; साक्षी–गवाह; संकल्प–निश्चय; परिमल–साहित्यिक संस्था का नाम; निर्लिप्त–जो शामिल न हो; गोष्ठी–विचार के लिए बुलाई गई सभा; बेबाक राय–स्पष्ट विचार; वात्सल्य–बच्चों के प्रति दिखाया जाने वाला प्यार; आवेश–जोश; लबालब–पूरी तरह।

पृष्ठ संख्या 86 स्मृति–याद; अभिन्न–घनिष्ठ; व्यवसायी–व्यापारी; हाथ से जाना–वश में न होना; धर्माचार–धर्म का पालन या आचरण करना।

पृष्ठ संख्या 87 शोध प्रबंध–खोज या रिसर्च करने के बाद लिखी गई पुस्तक; रूपांतर–अनुवाद; अकाट्य–जिसे काटा न जा सके; सांत्वना–दिलासा देना; विरल–कम मिलने वाली; ताबूत–शव को रखने वाला बक्सा; थिर–स्थिर; सँकरी–तंग; करील–झाड़ी के रूप में उगने वाला एक कंटीला पौधा; गैरिक वसन–साधुओं द्वारा पहने जाने वाले गेरुए कपड़े।

पृष्ठ संख्या 88 अपरिचित–अनजान; आहट–किसी के आने से उत्पन्न [illegible] ध्वनि; सिमट–एकत्रित होना; रत्न–मूल्यवान व्यक्ति; अनुकरणीय–जिस[illegible] पीछे-पीछे चला जा सके; स्याही फैलाना–जिसे लिखा न जा सके, किंतु [illegible] भी प्रयास करना।